अगरोहा से प्राप्त कुषाणकालीन मृन्मूर्तियां : एक अध्ययन

PAWAN KUMAR
LECTURER,
GSSS UKHALCHANA JHAJJAR HARYANA

शोध सार–भारतीय समाज में मिट्टी की मूर्तियों का महत्वपूर्ण स्थान है । मिट्टी की मूर्तियों की परम्परा समाज की सभी सभ्यताओं में अत्यंत प्राचीन काल से पाई जाती है । भारत में मिट्टी की कला का विकास पूर्व हडप्पा के समय से शुरू हो गया था और आठवीं नौवीं शदी तक चलता रहा । प्राचीन भारतीय साहित्य से भी मूर्ति बनाने की कला का पता चलता है । महाभारत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, हर्षचरित, वामनपुराण, नारदपुराण एवं वृहत्कथा कोष में मिट्टी की लघु मूर्तियों का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है । कुषाणकाल में काफी संख्या में मृन्मूर्तियां बनाई गई जो अगरोहा (हरियाणा) के अलावा कई स्थानों से मिली हैं । इस शोध पत्र में अगरोहा से प्राप्त कुषाणकालीन मृन्मूर्तियों का अध्ययन किया जाएगा ।

प्रस्तावना–अगरोहा स्थल हिसार–सिरसा रोड पर स्थित है । यह स्थल हिसार से 24 किलोमीटर उतर पूर्व में स्थित है । इसकी पहचान प्राचीन अगरोदक से की गई है । जो कि 650 हैक्टेयर जमीन में फैला हुआ है । अग्रवाल समाज अपनी उत्पत्ति इसी स्थान से मानते हैं । यहां का प्रारम्भिक उत्खनन सी.जे. रोजरस ने 1888–89 में किया । 1938–39 ईसवीं में एच.एल. श्री वास्तव ने उत्खनन करवाया तथा 1979 ईस्वीं में हरियाणा पुरातत्व विभाग ने इसका उत्खनन करवाया । यहां से काफी सख्या में मिट्टी की मृन्मूर्तियां प्राप्त हुई हैं ।

चतुर्भुज विष्णु–चतुर्भुज विष्णु की अगरोहा से एक मृन्मूर्ति मिली है जो वैजयन्ती माला पहने हुए है । इसके हाथ मे पुष्प चक्र शंख और गदा है । गदा बाईं ओर धरातल पर टिकी है तथा दायीं तरफ के हाथ में चक्र पकडे हुए है, माला घुटनों तक लटकती हुई है । धोती पहने हुए है, पैरों के नीचे पादीठ पर पुष्प बिखरे हुए हैं । कण्ठ में माला तथा हार पहन रखा है । कटि के उपर दो हाथों मे अंगवस्त्र दिखाया गया है । मुख का भाग खण्डित हो चुका है ।

अगरोहा से एक चार हाथों वाले महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति मिली है । इसमें देवी के एक हाथ में खाण्डा तथा दूसरे हाथ मे फरसा है । कानों में बडे–बडे कुण्डल लटके हुए हैं । गले में माला पहनी हुई है । सिर पर मुकुट धारण किए हुए है । आधी मूर्ति खण्डित हो चुकी है ।

महिषासुरमर्दिनी की चार हाथों वाली एक अन्य मृन्मूर्ति मिली है जिसकी बायें दाये उपर के दो हाथों में फरसे दिखाई दे रहे हैं । देवी के कानों में कुण्डल, गले मे माला तथा सिर पर मुकुट शोभायमान है ।

देवी की एक और अन्य अष्ट हस्ता मूर्ति जो मिली है वह चकौर है । यह मूर्ति शायद पूजा के समय घरों में लगाई जाती होगी । इसमें आठ हाथ साफ–साफ दिखाई देते हैं, हाथों में कंगन, हथियार शास्त्रासम विद्यमान हैं, देवी के गले की माला दोनों स्तनों के मध्य से नाभि तक लटकती दिखाई देती है । आंख, नाक, कान अच्छी तरह बनाये गये हैं, कानों मे कुण्डल हैं, मृन्मूर्ति के बार्डर को फूलों तथा बर्फी जैसी चकौर आकृतियों से सजाया गया है [1]।

साधु की मृन्मूर्ति–साधु को एक मूर्ति अगरोहा से प्राप्त हुई है । इसमे साधु पदमासन मुद्रा में बैठा है तथा जटाएं आगे की ओर गिरी हुई हैं । पेट चिपका हुआ है, सिर खण्डित हो चुका है ।

अगरोहा से एक साधु की अन्य मृन्मूर्ति भी मिली है जिसमें बडा उदरवाला साधु चौकी पर बैठा हुआ है । उसने दोनों हाथ दोनों पैरों पर टिकाये हुए हैं [2]।

भयभीत करने वाली मानवाकृतियां–अगरोहा से अनेक संख्या में भयभीत करने वाली मानवाकृतियां मिली हैं जिसमें दोनों हाथों से मुख खोलकर दांत दिखाकर डरावनी आकृतियां बनाई गई हैं । अभी भी ग्रामों मे कुछ चंचल प्रकृति के बच्चे इसी प्रकार की आकृतियां बनाकर एक दूसरे को डराया करते हैं [3]। इनमें भी कुबेर की तरह इनका उदर भारी भरकम दिखाया गया है । कुछ आकृतियों मे इनको नग्न दिखाया गया है तो कुछ में धोती बंधे हुए । किसी मे चौकी पर बैठे हैं तो किसी मे पालथी मारकर आसन पर बैठे दिखाया गया है । एक मूर्ति मे दोनों हाथों को छाती पर दिखाया गया है । गले में माला धारण किए हुए हैं ।

भारतीय यवन शासकों के मुख :–अगरोहा से 11 यूनानी शासकों की मृन्मूर्तियां मिली हैं । पहली मृन्मूर्ति में पांच मुख इक्ट्ठे जुडे हुए हैं । तीन मुख दायें तरफ तथा दो मुख बायें तरफ दिए गए हैं । इनमें बालों को महात्मा बुद्ध की तरह घुंघराले, कानों में कुण्डल, मोटे–मोटे होंठ तथा आंखें खुली हुई हैं । पांच मुख अलग–अलग मिले हैं जो कभी इन्हीं के साथ जुडे हुए थे । इन सब का आकार–प्रकार समान है ।

नारी मूर्ति :–अगरोहा से एक स्त्री की मूर्ति मिली है [4] जिसके सिर पर बालों का जूडा बना हुआ है । कानों में बडे–बडे कुण्डल दिखाये गए हैं । गले में माला है । दायां हाथ उपर उठाया हुआ तथा बायां हाथ कटि तक है । पेट पर जो चिन्ह बना हुआ है वह कार्षापण मुद्राओं पर तथा अहिच्छत्रा से मिलने वाले कण्ठाभूषणों पर बहुतायत से मिलता है । हाथों में चूडियां पहनी हुई हैं । कटि से नीचे की मूर्ति खण्डित हो चुकी है ।

यक्षी की मूर्ति :–अगरोहा से मिली यक्षी की मृन्मूर्ति अद्भुत सौन्दर्ययुक्त है । इसका आकार 6 इंच है तथा कला की दृष्टि से बहुत ही उत्कृष्ट है । सुडौल शरीर और विभिन्न अलंकरणों की बनावट से यह कुषाणकालीन मानी जाती है [5]किन्तु इस पर शुंग कला का प्रभाव भी कुछ मात्रा में है । इसमे बालों को दोनो कानों पर से खुले लटकाकर पीछे की ओर ले जाकर इस तरह गूथा गया है । केश विन्यास का यह एक बहुत सुन्दर ग्रन्थन बन गया है । केश विन्यास का यह एक बहुत सुन्दर उदाहरण है । इस कलाकृति की बडी विशेषताएं इसका उभयदर्शना (आगे पीछे दोनों ओर से दर्शनीय) बनाना है । इसके दोनों हाथों में एक–एक दर्जन से अधिक चूडियां और दोनों पैरों में भी लगभग इतनी ही कडियां हैं । नाभि आकार की अलंकृत मेखला सुशोभित है । दोनों कानों मे सर्वथा अलग तरह के कुण्डल हैं और गले में चार–चार लडों वाला कण्ठाभरण है जो दो जगह से मूल्यवान रत्नों से गूंठित करके अधिक भव्य बना दिया गया है । स्त्री के दायें हाथ में कमल पुष्प है जिसकों पृष्ठ भाग से भी देखा जा सकता है । दायें पैर का घुटना थोडा सा झुका हुआ बनाया है । यह खडे होने की एक कला है । पंजों के पास से यह खण्डित है [6]। इसके माथे पर बोरला नामक आभूषण है । यह कलाकृति अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती प्रतीत होती है ।

शेर भैंसे का युद्ध :–यह मृन्मूर्ति किसी बर्तन का ढक्कन प्रतीत होती है । इसके ऊपर काले भाग में शेर और भैंसे का युद्ध दिखाया गया है । सिंह ने अपने दांतो से भैंसे की पीठ पर वार किया हुआ है ।

इससे अशक्त होने से और भय के कारण भैंसे की जीभ बाहर निकल आई है । इस मूर्ति पर बहुत सुन्दर लाल आवरण किया हुआ है ।

इसका ढक्कन काले रंग का है । इस पर स्त्री का अति जीवन्त चित्र बना हुआ है । स्त्री ने भुजा और चोंहचे में चार–चार चूडियां पहनी हुई हैं ।

मुख्य आकृतियां :–अगरोहा से त्रिनेत्रवती पार्वती का मुख प्राप्त हुआ है जो शिवलिंग के आकर–प्रकार का है जिसके गले में माला है । तीसरी आंख नाक की सीधमें माथे पर बनाई गई है तथा दोनों आंखें खुली अवस्था में हैं । नाक, होंठ बहुत सुन्दर दिखाये गए हैं । अगरोहा से प्राप्त मुख अलग हटकर है जो सुराई आकार का है । नीचे आसन पर विराजमान है । मोटे–मोटे होंठ, नाक तथा आंखें ध्यानमग्न मुद्रा में हैं तथा ऊपर से खाली दिखाई देता है । इसी श्रेणी का अगरोहा से एक अन्य मोटा मुख प्राप्त हुआ है जिसमे मोटी तथा उभरी नाक सुन्दर दिखाई देती है ।

अगरोहा से अनेक मुख प्राप्त हुए हैं । उनमें से एक की मोटी ठोडी, बडी मूंछें तथा सिर के बाल पीछे की तरफ संवारे हुए हैं । कानों में कुण्डल ऐसा दिखाया गया है जैसे कि साधु हो जिसकी दाढी फैली हुई है । एक अन्य मुख महात्मा बुद्ध जैसा है जिसमें कानों में कुण्डल, ध्यानमग्न अवस्था में बालों का सिर पर जूडा तथा पीछे की तरफ भी संवारे हुए हैं । यह मूर्ति घिसी हुई है । किसी का मुख भयानक डरावने वाली अवस्था में है ।

किसी के सिर पर टोप, किसी की नाक लम्बी, सिर गंजा है । एक मुख ऐसा है जिसके माथे पर छेद बनाया है । यह सुराही की टोंटी के आगे का भाग है जिसमें से पानी बाहर निकलता है । एक के आधे बाल कटे हुए तथा आधे बाल बडे–बडे हैं । माथे पर बोरलानुमा आभूषण है । मोटी–मोटी आंखें और मोटे–मोटे होंठ बनाये हुए हैं । ये मुख घर में सजावट के रूप में प्रयोग आते होंगे ।

पूजा के मन्दिर :–अगरोहा से प्राप्त पूजा के मन्दिर को अंग्रेजी में वोटिव टैंक कहते हैं । इन लघु मन्दिर प्रतीकों में मानवाकृति, चरण युगल, सर्प, सीढी, कमलपुष्प, मत्स्य,कच्छप आदि प्रतीकात्मक चिन्ह बने हुए हैं । इनके चारों कानों के ऊपर तथा कहीं–कहीं दो कोठों के मध्य में भी जल रखने की कटोरियां बनी हुई हैं अथवा ज्योति जलाने हेतु ये दीपक हैं । मानवाकृतियों में बडी आकृति पुरूष की तथा लघु आकृति स्त्री की प्रतीक है ।

पूजा के इन दो प्रतीकों से वंश वृद्धि की कामना की जाती थी । चरणयुगल विष्णुपाद का प्रतीक है । सर्प और पिण्डी शिव के प्रतीक हैं । मत्स्य विष्णु के मत्स्यावतार का प्रतीक माना जा सकता है । सीढियां तालाब में उतरने का प्रतीक हैं । दूसरे वोटिव टैंक में कमल पुष्प के मध्य शिवलिंग बना है जिसमें कमलपुष्प योनि का प्रतीक है । एक वोटिव टैंक में शिवलिंग बना है । बायीं ओर की तरफ नाली जैसी बनावट योनि का प्रतीक है [7]।

संदर्भ :–

1. विरजानन्द दैवकरणि : अगरोहा की मृन्मूर्तियां फलक 49–53, पृ0–23
2. विरजानन्द दैवकरणि : अगरोहा की मृन्मूर्तियां फलक–41 पृ0–216
3. विरजानन्द दैवकरणि : अगरोहा की मृन्मूर्तियां, पृ0–21
4. स्वामी ओमानन्द सरस्वती के मतानुसार यह मूर्ति अग्रवालों की राजकुमारी शीला की है
5. नमन पी.आहूजा 'मोल्ड टैराकोटा फ्रॉम दि इन्डो गैन्गेटीक डिवाईड पृ0–46–47
6. योगानन्द शास्त्री : प्राचीन भारत में यौधेय गणराज्य, पृ0–23–24
7. विरजानन्द दैवकरणि : अगरोहा की मृन्मूर्तियां फलक–67–70, पृ0–23